खरपतवारों की सहायता से ज्वर की चिकित्सा करते हैं पारंपरिक चिकित्सक

* पौध भागों के बाहरी प्रयोग से उपचार

* 75 से अधिक खरपतवारों का पारंपरिक उपयोग

छत्तीसगढ़ में वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण में जुटे हुये वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि नये और पुराने सभी तरह के ज्वरों की चिकित्सा मे ग्रामीण और वन्य क्षेत्रों के पारंपरिक चिकित्सक 75 से भी अधिक उन पौधो का प्रयोग करते हैं जो कि खरपतवार की तरह हमारे आस-पास उगते है। इन खरपतवारों का प्रयोग बाहरी तौर पर अकेले या अन्य वनौषधियों के साथ किया जाता है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे एथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों और अध्ययनों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि अधिकतर पारंपरिक चिकित्सक खरपतवारों की जड़ो का प्रयोग करते है। छत्तीसगढ़ के मैदानी भागों के पारंपरिक चिकित्सक रात्रि मे आने वाले ज्वर की चिकित्सा के लिये रोगियों को मकोय नामक खरपतवार की जड़ कान मे बांधने की सलाह देते है। इस तरह के ज्वर के लिये गंडई - सालेवारा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक भृंगराज (भेंगरा) नामक खरपतवार की जड़ के प्रयोग की सलाह देते है। मानसिक रोगियो को हाने वाले ज्वर की चिकित्सा मे इसी तरह बेमची (बाकुची) की जड़ों का प्रयोग किया जाता है। पर जड़ को कान की बजाय गले में बांधा जाता है। दक्षिण छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सक हुलहुल नामक खरपतवार की जड़ का प्रयोग करते है। मलेरिया के ज्वर की चिकित्सा मे बागबहरा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक सफेद फूलो वाले धतूरा की जड़ो का प्रयोग करते है। इस जड़ को रोगी की दाहिनी भुजा मे बांधा जाता है। नगरी-सिहावा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक इस ज्वर के लिये सहदेवी नामक खरपतवार की जड़ का प्रयोग करते है। पर जड़ को कमर के चारो ओर बांधा जाता है। बस्तर क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक फुडहर (आक)नामक खरपतवार की जड़ को कान मे बांधने की सलाह देते है। सरईपाली क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सक जंगली चौलाई की जड़ो के बाहरी प्रयोग से पुराने ज्वरों की चिकित्सा करते है। उत्तरी छत्तीसगढ़ में पुराने ज्वरों की चिकित्सा मे भटकटैया की जड़ों का प्रयोग होता है। रोगी की अवस्था के अनुसार इन जड़ो को बांधने के लिये पारंपरिक चिकित्सक लाल, नीले और काले धागों का प्रयोग करते है। खरपतवारों को विशेष दिन और समय पर उखाड़ा जाता है। जड़ों का प्रयोग रोगी के ठीक होते तक होता है। इसके बाद जड़ों को नदी मे विसर्जित कर दिया जाता है या पीपल जैसे वृक्षों के पास गाड़ दिया जाता है। इनमे से बहुत से भागों की जानकारी से प्राचीन संदर्भ साहित्य भी भरे पड़े है। छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सकों के अलावा आम लोगों के बीच इस पारंपरिक ज्ञान की लोकप्रियता इसके प्रभावीपन की सूचक है। पारंपरिक चिकित्सक इन जड़ों के प्रभावों के वैज्ञानिक कारण नही जानते है। पंकज अवधिया का मानना है कि इस अनूठे पारंपरिक ज्ञान की वैज्ञानिक व्याख्या की आवश्यकता है। चूंकि उपयोग मे आने वाले सभी पौधे खरपतवार की तरह हमारे आस-पास उगते है अत: इनके प्रयोग में आम लोगों को पैसे नही खर्च करने पड़ते है। साथ ही इस ज्ञान का वृहत पैमाने पर प्रचार प्रसार इन पौधों की संख्या को खेतो से कम करने मे भी सहायक सिद्ध होगा।